शोध पत्र

सर्व कलां समर्थ: धन्य - धन्य

गुरु श्री तेग बहादर साहिब जी

दो दिवसिय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की पूर्व की यात्राएं एवम् इस संबंध में ऐच्छिक विषय

स्थान: संचालन द्वारा:- अकाल युनिवर्सिटी (साबों की तलवंड़ी पंजाब)

तारिख:२७/२८/०४/२०२२

शोध निर्देशक

इतिहासकार सरदार

भगवान सिंघ जी 'खोजी' पटियाला

मो. ९७८१९१३११३

शोधार्थी

स.रणजीत सिंघ अरोरा 'अर्श' पुणे

मो.९०९६२२२२३

अनुक्रमणिका

- प्रमाण पत्र — पृष्ठ क्रमांक - ३
- आभार ज्ञापन — पृष्ठ क्रमांक - ४
- प्रस्तावना — पृष्ठ क्रमांक - ५
- विषय प्रवेश — पृष्ठ क्रमांक - ८
- परिशिष्ट — पृष्ठ क्रमांक-३७
- शोध पत्र की कुंजी — पृष्ठ क्रमांक - ४०
- शोध पत्र के विषय से संबधित साहित्य का पुनरावलोकन — पृष्ठ क्रमांक - ४१
- शोध पत्र का उद्देश्य — पृष्ठ क्रमांक - ४२
- शोध पत्र का निष्कर्ष — पृष्ठ क्रमांक -४३
- संदर्भ सुचि — पृष्ठ क्रमांक - ४४

प्रमाण पत्र

मैं प्रमाणित करता हूं कि सरदार रणजीत सिंघ अरोरा 'अर्श' द्वारा धन्य - धन्य गुरु श्री तेग बहादर साहिब जी, के संबंध में राष्ट्र भाषा हिन्दी में लिखा हुआ शोध पत्र ***<u>शीर्षक: सर्व कलां समर्थ: धन्य - धन्य गुरु श्री तेग बहादर साहिब जी,</u>*** मेरे निर्देशन में संपन्न हुआ है| शोध पत्र में प्रस्तुत की गई सभी जानकारी और ऐतिहासिक तथ्य सही है|

मैं अनुशंसा करता हूं कि बहुत ही कम समय में दिये गये विषय पर आप जी ने एक उत्तम प्रारुप में शोध पत्र लिख कर दिनांक ३ व ४ मार्च सन् २०२२ को सुल्तानपुर - लोधी (पंजाब) में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' की पूर्व की यात्राएं एवम् इस संबंध में ऐच्छीक विषय पर आयोजित इस सम्मेलन में इस शोध पत्र को टीम खोज - विचार की और से अपने द्वितीय शोध पत्र के रुप में प्रस्तुत किया है|

सिक्ख इतिहास और गुरुबाणी पर आप जी द्वारा अनेकों रचनाएं मेरे मार्ग दर्शन में रचित की गई है| भविष्य के लिये मेरी और से अनेकों शुभकामनाएं आप जी को प्रेषीत की जा रही है|

शोध निर्देशक:-

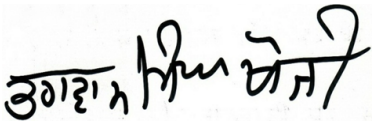

(इतिहासकार सरदार भगवान सिंघ 'खोजी'|)

तारिख: १२/०२/२०२२

स्थल: पटीयाला (पंजाब)

आभार ज्ञापन

इस शोध पत्र कार्य को सम्पन्न करने हेतु संबधित परिपत्र की रचना में मुझे अनेकों व्यक्तियो का सहयोग प्राप्त हुआ है, इन सभी के सहयोग एवं मार्गदर्शन के कारण ही इस शोध पत्र को लिख पाना संभव हो सका है, मैं व्यक्तिगत रुप से इन सभी का कृतज्ञ एवं आभारी हूं|

मैं हमारी खोज - विचार टीम के आधार स्तंभ इतिहासकार सरदार भगवान सिंघ जी 'खोजी' का विशेष आभार व्यक्त करता हूं कि मुझे विशेष रुप से मेरे इस द्वितीय शोध पत्र लेखन को रचित करने में मेरा मार्गदर्शन कर प्रोत्साहित किया| मैं विशेष रूप से 'अकाल युनिवर्सिटी के सभी डायरेक्टर और इस सम्मेलन के आयोजको' का भी आभारी हूं कि उन्होंने मुझे इस शोध पत्र को प्रस्तुत करने के लिए विशेष रूप से आमंत्रित किया| मैं अपने परिवारजनों और मेरी टीम के सहयोगीयों के साथ - साथ उन सभी का आभारी हूं जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस शोध पत्र लेखन को संपूर्ण करने में सहयोग, प्रोत्साहन, एवं उत्साहवर्धन किया है|

शोधार्थी:-

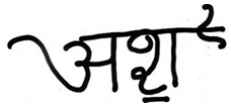

(सरदार रणजीत सिंघ अरोरा 'अर्श' पुणे|)

तारिख: १२/०२/२०२२, स्थल: पुणे (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना

अर्श की कलम से:-

संपूर्ण विश्व में सिक्ख धर्म को सबसे आधुनिक धर्म माना जाता है। सिक्खों ने विश्व में अपनी सेवा, सिमरन, त्याग, इंसानियत और देश भक्ति के जज्बे से अपनी एक अलग विशेष पहचान 'विश्व पटल' पर निर्माण की है। इस मार्शल सिक्ख कौम के स्वर्णिम, अनमोल इतिहास को आम जन समुदाय में पहुंचाने की कोशिश टीम - खोज विचार के लेखक के द्वारा की जा रही है।

अप्रैल सन् २०२१ - २२ में धन्य - धन्य नौवीं पातशाही 'धर्म की चादर, श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी' का ४०० वां पावन, पुनीत, प्रकाश पर्व पूरी दुनिया में हर्षोल्लास और गुरु मर्यादा से मनाया जा रहा है। इस महान ऐतिहासिक पर्व को पूरे विश्व में हर्षोल्लास से क्यों मनाया जा रहा है? कारण यदि हम इतिहास के पन्नों को पलट कर देखेंगे तो आज से १०० वर्ष पूर्व अर्थात सन् १९२१ में भी यह गुरुपर्व ३०० साल के रूप में आया था परंतु उस समय आज के आधुनिक युग की तरह से पूरी दुनिया की संगत को जोड़कर शताब्दीयां नहीं मनाई जाती थी। इतिहास गवाह है कि २० फरवरी सन् १९२१ को 'साका ननकाना साहिब' हुआ था। उन दिनों में पूरी सिक्ख कौम महंतों से गुरुद्वारों को आजाद कराने के लिए पूरी ताकत से संघर्ष कर रही थी। यदि हम २०० वर्ष और पीछे जाते हैं तो सन् १८२१ में महाराजा रणजीत सिंघ जी का राज्य था। उस समय 'सिक्ख राज' अपने अस्तित्व के लिए लगातार संघर्ष कर रहा था। उस समय प्रकाश पर्व तो मनाया गया था परंतु २०० वर्ष को शताब्दी पर्व के रूप में नहीं मनाया गया था। यदि हम ३०० वर्ष और पीछे जाते हैं तो उस समय 'बाबा बंदा सिंघ बहादर जी' की शहीदी को मात्र ५ वर्ष ही हुए थे। उस समय 'सिक्ख पंथ' अनेक कठिनाइयों का लगातार सामना कर रहा था। सिक्ख योद्धाओं को घोड़ों की पीठ पर बैठकर जंगलों में रहकर रात गुजारना पड़ रही थी। उस समय भी नौवीं पातशाही 'धर्म की चादर गुरु ‘श्री तेग बहादर जी' का प्रकाश पर्व नहीं बनाया जा सका था।

इस गुरु पर्व का विशेष महत्व इसलिए भी है कि धन्य - धन्य प्रथम पातशाही गुरु 'श्री नानक साहिब जी' ने अपनी चार उदासी यात्राओं में ३६००० मील की यात्रा की और इन यात्राओं के माध्यम से जगत का कल्याण किया था। उसके पश्चात नौवीं पातशाही गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' ने जगत कल्याण के लिए सबसे अधिक भ्रमण किया था।
गुरबाणी में अंकित है:-

जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरु सो थानु सुहावा राम राजे॥
(अंग ४५०)

अर्थात् जिस - जिस स्थान पर सद्गुरु जी के चरण पड़े वो स्थान अकाल पुरख की कृपा से 'सुहावा' अर्थात स्वर्ग है। इस उच्चारित गुरबाणी के अनुसार जहां - जहां भी गुरु जी ने धर्म प्रचार - प्रसार के लिए भ्रमण किया उन स्थानों पर जाकर उन स्थानों पर बने ऐतिहासिक गुरुद्वारे और गुरु जी की निशानियां और उनके द्वारा बनाए गए कुओं के दर्शन टीम खोज - विचार (प्रमुख आधार स्तंभ: इतिहासकार सरदार भगवान सिंघ जी खोजी) के द्वारा बनाये गये वीडियो क्लिप और चित्रों के माध्यम से संगतो को करवाये जा रहें है। साथ ही गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' द्वारा निर्मित इस ऐतिहासिक 'गुरु पंथ खालसा' की फुलवारी के दर्शन इन 'शोध पत्र' जैसी साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से पाठकों (संगतों) को करवाना अत्यंत आवश्यक है।

गुरु पातशाहा जी के इतिहास से संबंधित वो सभी 'चरण चिन्ह अंकित' स्थान जिनका वर्णन संदर्भित ग्रंथों में है। व्यक्तिगत रूप से उन स्थानों पर जाकर स्थानीय इतिहासकारों एवं बुजुर्गों से सभी अनमोल ऐतिहासिक जानकारियों को एकत्र कर पुनः नौवीं पातशाही गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' के स्वर्णिम, अनमोल इतिहास को सोशल मीडिया के माध्यम से और पुस्तकों की आवृत्ति प्रकाशित कर एवम् इस तरह विश्व स्तरिय सम्मेलनों का आयोजन कर पूरे विश्व के समक्ष रखने का बेहतरीन प्रयास हम सभी सिक्ख इतिहासकार और साहित्य की सेवा करने वाले, सेवादारों के माध्यम से किया जाना चाहिये|

पूरे विश्व में सबसे ज्यादा बोली, पढ़ी - लिखी और समझे जाने वाली भाषा हिंदी में इस पूरे स्वर्णिम, अनमोल इतिहास का साथ ही साथ हिंदी में अनुवाद लेखक के द्वारा निरंतर किया जा रहा है। इस शोध पत्र के लेखक के द्वारा इसे 'गुरु पंथ खालसा' की महान सेवा के रूप में स्वीकार कर स्वयं का सौभाग्य समझते हुए राष्ट्रभाषा हिंदी में स्वयं के ज्ञान और अनुभव से लिखने का विशेष प्रयास किया जा रहा है।

वाहिगुरु जी के आशीर्वाद से लेखक का हिंदी साहित्य,गुरुमुखी और मराठी भाषा पर उत्तम प्रभुत्व है। इस कारण से गुरमुखी के क्लिष्ट शब्दावली को सरल - सटीक आम बोलचाल की भाषा में अनुवाद कर हिंदी के पाठकों को सिक्ख इतिहास की अभिनव जानकारी देने का विशेष प्रयास है। लेखक स्वयं विज्ञान के स्नातक और लघु उद्योजक है। इसलिए गुरुवाणी और सिक्ख इतिहास को आधुनिक विज्ञान से जोड़कर एक समन्वय बनाने की कोशिश इस स्वर्णिम इतिहास की लेखनी में करने का लेखक का विशेष प्रयत्न होगा।

विषय प्रवेश

<u>सर्व कलां समर्थ: धन्य -धन्य गुरु श्री तेग बहादर साहिब जी</u>

इस सृष्टि में अवतारी महापुरुष ईश्वर के समकक्ष होते हैं एवं अपनी जीवन यात्रा में १६ कलां से संपूर्ण होते हैं| ऐसे महापुरुषों को सर्व कलां संपूर्ण के नाम से सम्मान पूर्वक विभूषित कर संबोधित किया जाता है| धन्य - धन्य गुरु 'श्री नानक देव साहिब जी' की नौवीं ज्योत धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' निश्चित ही सर्व कलां संपूर्ण अवतारी गुरु थे| सर्व कलां संपूर्ण गुरु यदि इस शब्द को हम शब्दों में विश्लेषण कर, परिभाषित करें तो वह गुरु सर्व कला संपूर्ण है, जिनकी जीवन यात्रा निम्नलिखित १६ कलाओं से ओतप्रोत हो, वह कौन सी १६ कलाएं है? जिन्हें धारण करने से अवतरित गुरु सर्व कला संपूर्ण होते हैं| इन १६ कलाओं को समझने के लिए हमें निम्नलिखित १६ कलाओं को परिभाषित कर एवं उनका विश्लेषण कर, प्रकाश डालने की आवश्यकता है|

१. श्री धन संपदा: इस कलां से युक्त अवतारी गुरुओं के पास अपार धन - संपदा और कुबेर का खजाना होता है, ऐसे अवतारी गुरु आत्मिक और बौद्धिक रूप से भी अत्यंत धनवान होते हैं| ऐसे अवतारी गुरु के घर से कोई भी खाली हाथ नहीं जाता है|

२. भू अचल संपत्ति: ऐसे अवतारी गुरु जो इस पृथ्वी पर राजभोगने की क्षमता रखते हो, पृथ्वी के एक बड़े भूभाग पर जिसका आधिपत्य होता है और उस भूभाग के निवासी उसके अनुयायी बन कर अपना जीवन सफल करते हैं|

३. कीर्ति यश प्रसिद्धि: ऐसे अवतारी गुरु जिस का मान - सम्मान और यश की कीर्ति चारों दिशाओं में फैली होती है, इनके अनुयायी इनके प्रति अत्यंत श्रद्धा एवं अटूट विश्वास रखते हैं| ऐसे अवतारी गुरु कीर्ति यश प्रसिद्धि कलां से संपन्न माने जाते हैं|

४. मधुर वाणी की समोहकता: ऐसे अवतारी गुरु की वाणी मोहक और मधुर होती है| इनकी वाणी की मिठास से क्रोधित व्यक्ति भी एकदम शांत हो जाता है और उसके हृदय में भक्ति की भावना उमड़ जाती है|

५. लीला आनंद एवं उत्सव: ऐसे अवतारी गुरु अपने जीवन की लीलाओं को रोचक और मोहक बनाने में सक्षम होते है, इनकी लीलाओं की कथा को श्रवण कर कामुक व्यक्ति भी भावुक और विरक्त हो जाता है|

६. कांति सौंदर्य और आभा: ऐसे अवतारी गुरु की छवि को देखकर मन स्वत: ही प्रफुल्लित और आकर्षित हो जाता है| इनके मुख मंडल की आभा को देखकर इनकी बारंबार छवि को निहारने का मन करता है| ऐसे अवतारी गुरु कांति सौंदर्य एवं मुख्य मंडल की आभा कलां से संपन्न होता है|

७. विद्या मेधा बुद्धि: ऐसे अवतारी गुरु सभी प्रकार की विद्याओं में निपुण होता है| वेद - वेदांग, धर्म शास्त्र के साथ युद्ध, युद्ध नीति और संगीत कलां इत्यादि में पारंगत ऐसे अवतारी गुरु इस कलां के अंतर्गत आते हैं|

८. विमला पारदर्शिता: ऐसे अवतारी गुरु जिनके मन में किसी भी प्रकार का छल - कपट नहीं होता है, इनके लिए सभी एक समान होते हैं, ऐसे गुरु जो ऊंच - नीच और जात - पात को नहीं मानते है, ऐसे अवतारी गुरु विमला पारदर्शिता कलां से युक्त होता है|

९. उत्कर्षिणि प्रेरणा और नियोजन: ऐसे अवतारी गुरु युद्ध या सामान्य जीवन में योजनाबद्ध तरीके से अनुशासित होकर प्रत्येक कार्य को अंजाम देते है| ऐसे अवतारित गुरु में इतनी शक्ति व्याप्त होती है कि उनके अनुयायी, उनसे प्रेरणा लेकर कठिन से कठिन लक्ष्य का भेदन कर सकते हैं|

१०. ज्ञान नीर क्षीर विवेक एवम् संतोष: ऐसे अवतारी गुरु अपने विवेक और संतोष का परिचय देकर समाज को नई दिशा प्रदान करते हैं| ऐसे अवतारी गुरु सत्य और

असत्य को भलीभांति जानकर उनमें भेद करना जानते हैं| ऐसे अवतारी गुरु ज्ञान नीर क्षीर विवेक एवम् संतोषी कलां से संपन्न होते हैं|

११. क्रिया कर्मण्यता: ऐसे अवतारी गुरु जी की इच्छा मात्र से संसार का प्रत्येक कार्य संपन्न हो सकता है एवं ऐसे अवतारी गुरु सामान्य मनुष्य की तरह कर्म करता है एवं अपने अनुयायियों को सत्कर्म करने की प्रेरणा देता है| ऐसे अवतारी गुरु क्रिया कर्मण्यता कलां से संपन्न होता है|

१२. योग चित्तलय: ऐसे अवतारी गुरु जिनका मन केंद्रित होता है, जिन्होंने अपने मन को आत्मा में लीन कर लिया होता है, ऐसे अवतारी गुरु मृत व्यक्ति को भी पुनर्जीवित कर सकते हैं| ऐसे अवतारी गुरु योग चित्तलय कलां से संपन्न होते हैं|

१३. प्रहवि अत्यंतिक विनय: इस शब्द का अर्थ विनय होता है अर्थात ऐसे अवतारी गुरु जो जगत का स्वामी ही क्यों ना हो? परंतु उसमें कर्ता का अंहकार नहीं होता है| ऐसे अवतारी गुरु प्रहवि अत्यंतिक विनय कलां से संपन्न होते हैं|

१४. सत्य यथार्थ: ऐसे अवतारी गुरु कभी भी कटु सत्य बोलने से परहेज नहीं करते हैं| ऐसे अवतारी गुरु धर्म की रक्षा के लिए सत्य को परिभाषित करना अच्छे से जानते हैं| ऐसे अवतारी गुरु सत्य यथार्थ कलां से परिपूर्ण होते हैं|

१५. ईशान आधिपत्य: ऐसे अवतारी गुरु में सर्वगुण सर्वदा व्याप्त रहते हैं| जिससे वह अपने अनुयायियों पर अपना विशेष प्रभाव स्थापित कर पाते हैं एवं आवश्यकता पड़ने पर अपने अनुयायियों को अपने प्रभाव की अनुभूति भी करवाते हैं| ऐसे अवतारी गुरु ईश्वर के समान सर्व शक्तिशाली एवं सर्व लोकों के अधिपति होते हैं, ऐसे अवतारी गुरु ईशान आधिपत्य कलां से परिपूर्ण होते हैं|

१६. अनुग्रह उपकार: ऐसे अवतारी गुरु जो निस्वार्थ भावना से लोक कल्याण करते हैं, ऐसे अवतारी गुरु अनुग्रह उपकार कलां से परिपूर्ण होते हैं|

उपरोक्त अधोरेखित सोलह कलाओं से संपूर्ण गुरु ही सर्व कलां संपूर्ण होता है| धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' का जीवन चरित्र निश्चित ही इन १६ कलाओं से परिपूर्ण था| इसलिए इस जगत के अधिपति धन्य - धन्य गुरु 'श्री नानक देव साहेब जी' की नौंवी ज्योत धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' सर्व कला संपूर्ण थे| हम इस शोध पत्र में विस्तार से गुरु पातशाहा जी के उस स्वर्णिम इतिहास पर प्रकाश डालेंगे, जिससे कि निश्चित ही साबित होगा कि धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादुर जी' सर्व कला संपूर्ण थे| गुरु पातशाह जी के जीवन चरित्र का इतिहास इन १६ कलाओं में समाहित होकर सर्व कलां संपूर्ण कैसे था? निश्चिती ही इस शोध पत्र में उन विशेष बिंदुओं को इंगित कर, गुरु पातशाहा जी के जीवन के स्वर्णिम इतिहास का विस्तार से विश्लेषण इस शोध पत्र में अंकित किया जाएगा|

सिक्ख धर्म के चौथे गुरु 'श्री राम दास साहिब जी' ने अपनी उच्चारित वाणी में सिक्ख गुरुओं के लिए अंकित किया है:-

सा धरती भई हरीआवली जिथै मेरा सतिगुरू बैठा आइ।

से जंत भए हरीआवले जिनी मेरा सतिगुरु देखिआ जाइ।

धनु धंनु पिता धनु धंनु कुलू धनु धनु सु जननी जिनि गुरु जणिआ माइ।।
(अंग क्रमांक ३१०)

अर्थात् वो माता धन्य है, वो पिता धन्य है; जिसने गुरु को जन्म दिया और वो स्वर्णिम समय ५ बैसाख १६७८ का दिवस था (१ अप्रैल सन् १६२१ दिन रविवार) अमृतवेला (ब्रह्म मुहूर्त) के इस सौभाग्य भरे समय में नौवीं पातशाही 'गुरु तेग बहादुर साहिब जी' का प्रकाश हुआ था।

इस ब्रह्म मुहूर्त के समय में धन्य - धन्य 'गुरु हरगोबिंद साहिब जी' दरबार साहिब में 'आसा दी वार' का कीर्तन संगतों के साथ श्रवण कर रहे थे, उसी समय दरबार

साहिब में एक मेवड़ा / अरदासिआ (सेवादार) स्वयं दरबार में हाजिर हुआ और गुरु जी को इस खुशखबरी से अवगत करवाया था।

इस खुशखबरी से उपस्थित संगतों में खुशी की लहर दौड़ गई। जब कीर्तन की समाप्ति हुई तो संगतों की और से गुरु 'श्री हरगोबिंद साहिब जी' को बधाइयां प्रेषित की गई थी। अमृतसर ही नहीं अपितु जहां - जहां भी गुरु की संगतों को यह खुशखबरी मिलती है तो हर्षोल्लास के माहौल में संगतों के द्वारा एक दूसरों को बधाइयां प्रेषित की गई थी। गुरु जी अपने सेवादार और परिवार के साथ 'गुरु के महल' पधारे थे। उस समय बाबा बुड्ढा जी, भाई गुरदास जी, भाई बिधि चंद जी गुरु जी के साथ थे (अपने समय में यह सभी सिक्ख इतिहास की महान शख्सीयतें थी)। गुरु जी ने नवजात बालक के आगे अपने शीश को झुका कर आदर पूर्वक नमन किया था।

यह एक आश्चर्यजनक, अचरज भरी घटना थी; जिसे 'पंथ प्रकाश' नामक ग्रंथ में इस तरह से अंकित किया गया है:-

तब गुरु सिस को बंदन किनी अति हित लाइ।

बिधीआ कहि कस बंधन की कहो मोह समझाइ।।

अर्थात्

भाई बिधि चंद जी ने अपने मुंखोबंद से उच्चारित किया कि गुरु पातशाह जी आपको पहले से ही ४ पुत्र रत्नों की प्राप्ति है। आपने अपने पुत्रों को बहुत आशीष दी है एवं अत्यंत प्यार भी किया परंतु इनके जन्मों पर आपने अपने शीश को नमन नहीं किया था। क्या कारण है कि इस नवजात बालक को अपने हाथों में उठा कर बहुत ही गौर से निहारा और अपने शीश को इनके समक्ष झुका दिया? गुरु जी ने बहुत ही विनम्रता और प्यार से उत्तर दिया बिधिचंद जी आप भ्रम में मत रहना आने वाले समय में यह बालक "दिन रक्ष संकट हरै। एह निरभै जर तुरक उखेरी"।।

अर्थात् यह बालक दीन के रक्षक होंगे और बड़े से बड़े संकटों का नाश कर देंगे और यह निर्भय होंगे एवं दुश्मनों को जड़ों से उखाड़ के रख देंगे। मैंने स्वयं तो इनको नमन किया है परंतु भविष्य में इनके आगे पूरी दुनिया शीश झुकाकर नतमस्तक होगी। निश्चित ही यह अद्भुत नवजात बालक 'तेग का धनी' होगा। इसलिए इनका नामकरण भी मैंने 'तेग बहादर' कर दिया है। **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित लीला आनंद उत्सव और कांति सौंदर्य आभा कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)।**

ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार १ अप्रैल सन् १६२१ दिन रविवार को अमृतवेले (ब्रह्म मुहूर्त) मैं नौवीं पातशाही गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' का प्रकाश हुआ था। इस विशेष अवसर पर संगतों में खुशी की लहर थी और एक दूसरे को बधाइयां दी जा रही थी।

गुरू 'श्री हरगोबिन्द साहिब जी' के द्वारा आपका नामाकरण 'तेग बहादर' के नाम से किया गया था। कई ऐतिहासिक ग्रंथों और संदर्भों में आप जी को 'त्यागमल' कहकर भी संबोधित किया गया है परंतु बचपन से ही आपका नाम 'तेग बहादुर' रख दिया था। यदि हम सिक्ख धर्म के दस गुरु, गुरु 'श्री नानक देव जी' से दसवें गुरु 'श्री गोबिंद सिंघ जी' के नामों पर गौर करें तो केवल गुरु 'श्री तेग बहादर जी' का नाम ही फारसी भाषा में रखा गया था।
श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' की वाणी में अंकित है:-

जा तुधु भावै तेग वगावहि सिर मुंडी कटि जावहि ।।
(अंग क्रमांक १४५)

अर्थात् तेग का अर्थ होता है कृपाण, खड्ग।

"देग, तेग जग में दो चले" अर्थात् आप जी तेग के साथ - साथ अत्यंत बहादुर भी होंगे। **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित विद्या मेधा कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)।**

आप जी को बचपन में पूरे परिवार की और से अत्यंत लाड़ - प्यार किया गया था। आप जी की बड़ी बहन 'बीबी वीरो' आप जी को बहुत प्यार कर पालने में खिलाती थी। बड़े आश्चर्य की बात है कि आप जी ने बाल्यावस्था में कभी भी रोकर 'दूध पीने' की मांग नहीं की थी। **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित लीला आनंद उत्सव और ज्ञान नीर क्षीर विवेक एवम् संतोषी कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)।**

एक दिन गुरु 'श्री हरगोबिंद साहिब जी अपने तख्त पर विराजमान होकर संगतों को उपदेशित कर रहे थे तो उस समय आप जी अपनी बाल लीलाओं से सभी को मोह लेते हैं और खेलते - खेलते गुरु जी की गोद में जाकर बैठ जाते हैं। उस समय बाल 'तेग बहादुर साहिब जी' ने गुरु जी के पीरी वाले 'गातरे' को कसकर पकड़ लिया था। (कृपाण को संजो कर रखने वाले कपड़े से बने हुये पट्टे को 'गातरा' शब्द से संबोधित करते हैं)। जब गुरु 'श्री हरगोबिंद साहिब जी' ने आप जी के हाथ से गातरा छुड़वाने का प्रयत्न किया तो आप जी ने उसे और कसकर पकड़ लिया था। उस समय गुरु 'श्री हरगोबिंद साहिब जी' ने भाव विभोर होकर कहा था कि पुत्तर जी अभी समय नहीं आया है; जब समय आएगा तब आपको 'देग' चलानी भी पड़ेगी और खानी भी पड़ेगी। **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित लीला आनंद एवम् उत्सव कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)।**

माता नानकी जी की कोख से दो बालक बाबा अटल जी और तेग बहादुर साहिब जी ने जन्म लिया था। बाल तेग बहादुर साहिब जी और बाबा अटल जी का आपस में बहुत स्नेह था और आप दोनों भाई हमेशा साथ में रहकर संगत करते थे। गुरु जी के अन्य पुत्र भी संगत करते थे परंतु तेग बहादुर जी सजे हुए दीवान में सबसे पीछे 'विस्मय रंग' में सराबोर होकर हमेशा शीश झुकाकर विनम्रता से दीवान की समाप्ति तक बैठते थे। आप जी का स्वभाव एकदम गरीब था और आप जी 'एकांत प्रिय' थे। माता नानकी जी ने गुरु 'श्री हरगोबिंद पातशाह जी' से वार्तालाप करते हुए इस बात की चिंता जताई थी कि बाल 'तेग बहादुर जी' स्वभाव से कुछ अलग हैं। 'तेग बहादुर जी' के भाई बाबा गुरदित्ता जी, भाई अनि राय जी और भाई

सूरजमल संगतों से मेलजोल कर सेवाएं करते थे परंतु 'तेग बहादर जी' का स्वभाव अपने सभी भाइयों से अलग था। एकांत प्रिय 'तेग बहादर जी' संगतों से, मसंदों से और सेवादारों से ज्यादा घुलते - मिलते नहीं थे। 'पंथ प्रकाश' नामक ग्रंथ में अंकित है:-

कहि बोलहि बहु धारहि मौन जग बिवहार न जानहि कौन ।।

अर्थात एकांत प्रिय 'तेग बहादुर साहिब जी' यदि किसी से वार्तालाप नहीं करेंगे और मेलजोल नहीं रखेंगे तो सांसारिक जीवन में इनकी जान - पहचान कैसे होगी? **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित विमला पार्दशिता कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)।**

गुरु 'श्री हरगोबिन्द पातशाह जी' ने माता नानकी जी से कहा था कि यह बालक, आम बालक नहीं है। इसकी रुचि दूसरे बालकों से एकदम अलग होगी। आप जी माता नानकी से कहते हैं कि आगे किसको कौन पहचानेगा? आप जी चिंता मत करो भविष्य में इसके गृह में एक ऐसा पुत्र जन्म लेगा; जिसके बारे में गुरु जी ने अपने मुखारविंद से उच्चारित किया:-

"इसको पुत्तर होये बलवंड तेज प्रचंड खलखंड़"।।

अर्थात् एक ऐसा योद्धा पुत्र जन्म ले लेगा जो दुनिया में 'श्री गुरु नानक साहिब जी' की इस फुलवारी में चांद चार लगा देगा। **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित किर्ती यश प्रसिद्धी कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)।**

सन् १६२५ में आप जी के बड़े भ्राता भाई गुरदित्ता जी के 'परिणय बंधन' का आयोजन किया गया था। उस समय इस चार वर्ष की आयु में आप जी के 'त्याग मुरत' स्वभाव के दर्शन होते हैं। इस 'परिणय बंधन' में जब बारात का आयोजन हुआ था तो 'तेग बहादर जी' को सुंदर परिधान और आभूषणों से सुशोभित किया गया था। पूरी बारात सज के 'गुरु के महल' से थोड़ी दूर पहुंचती हो तो चार वर्ष की आयु के बाल 'तेग बहादर जी' ने एक निर्धन बालक को देखा जो अत्यंत गरीब

और वस्त्र हीन था। ठंड के इस समय में बाल 'तेग बहादुर जी' ने उस बालक से पूछा कि बारात के साथ चलते हुए आपने सुंदर वस्त्र क्यों परिधान नहीं किए हैं? उस गरीब बालक में हाथ जोड़कर अश्रुपूरित आंखों से उत्तर दिया कि मेरा और मेरी मां का भी दिल करता है कि मैं सुंदर वस्त्र परिधान करूं परंतु हमारे पास तो दो वक्त खाने के लिए रोटी भी उपलब्ध नहीं है तो आप ही बताएं मैं अपने तन पर सुंदर वस्त्रों को कैसे परिधान करूं? बाल तेग बहादुर साहिब जी उस गरीब बालक की व्यथा सुनकर वहीं खड़े हो गए एवं 'भाव विभोर' होकर आप जी ने अपने सुंदर परिधान और आभूषणों को उतारकर बालक को पहना दिए। **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित अनुग्रह उपकार कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)|**

उस समय सारा परिवार 'परिणय बंधन' की खुशी के रंग में डूबा हुआ था परंतु तेग बहादुर जी एक निर्धन - निर्वस्त्र बालक के तन को अपने वस्त्रों से ढ़ाक कर खुशी मना रहे थे।

बाल 'तेग बहादुर साहिब जी' का रुतबा बहुत ही ऊंचा था। एक दिन एक महिला अपने छोटे बच्चे को लेकर आई और कहने लगी कि यह आपका बाल सखा है; आप ही इसे समझाएं कि यह ज्यादा गुड ना खाया करें। बाल 'तेग बहादर' ने उत्तर दिया की माता जी आप मेरे पास इस मेरे बाल सखा को अगले हफ्ते लेकर आना और जब अगले हफ्ते वो माता अपने बच्चे को लेकर 'तेग बहादुर जी' के पास गई और कहने लगी कि यह अभी भी बहुत गुड खाता है; आप इसे समझाएं कि ज्यादा गुड खाना अच्छी बात नहीं होती है। बाल 'तेग बहादर जी' ने उस बाल सखा को कहा कि आप ज्यादा गुड मत खाया करो तो माता बोल पड़ी कि इस एक वाक्य को बोलने के लिए आपने मुझे पूरे एक हफ्ते का इंतजार क्यों करवाया? बाल तेग बहादुर जी ने उत्तर दिया कि माताजी एक हफ्ते पहले उस दिन मैंने आप ही गुड़ खाया हुआ था। इसलिए मैं उस दिन मैं मेरे बाल सखा को कैसे मना कर सकता था? 'तेग बहादर जी' अपने वचनों के पक्के थे। प्रत्येक शब्द को तोल - मोल कर कर बोलते थे|| **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित बाल लीला एवमं उत्सव कलां और विद्या मेधा कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)|**

नोट:-1. गुरु हरगोबिंद साहिब जी मीरी और पीरी ऐसी तो कृपाणे धारण करते थे। इन कृपाणों को 'भक्ति - शक्ति' या 'संत - सिपाही' की उपमा से भी मंडित किया जाता है।

बाल बाल 'तेग बहादुर जी' ने चार वर्ष की आयु से लेकर दस वर्ष की आयु तक 'बाबा बुड्ढा जी' से केवल शिक्षा ही ग्रहण नहीं की अपितु गुरु 'श्री नानक देव साहिब जी' से लेकर वर्तमान समय तक सिक्ख इतिहास का अध्ययन कर उन्हें ठीक से समझ लिया था। 'बाबा बुड्ढा जी' से आप जी ने अपने दादा 'श्री गुरु अर्जन देव साहिब जी' की शहीदी के इतिहास को भी सुना था। लगातार ६ वर्ष तक आप जी 'बाबा बुड्ढा जी' के सानिध्य में रहे और जीवन की जरूरतों को अच्छी तरह से समझ लिया था। "बाबा बुड्डा' जी के सात्विक जीवन की उच्च शिक्षाओं को आपने अपने हृदय में समाहित कर अपने स्वयं के जीवन को 'भक्ति भावनाओं' के रंग से भर दिया था। **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित बाल विद्या मेधा बुद्धी कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)।** 'भाई गुरदास जी' और 'बाबा बुड्ढा जी' ने मिलकर भावी गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' को उत्तम ढंग से सिक्ख रीति - रिवाजों और संस्कारों से शिक्षित भी किया था। 'भाई गुरदास जी' ने ब्रजभाषा, के अतिरिक्त कई अन्य भाषाओं का ज्ञान भी भावी गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' को दिया था। इसलिये गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' की रचित बाणी में पुरातन हिंदी की शब्दावली बहुतायात में पायी जाती है| अपने समय में भाई गुरदास जी बाल 'तेग बहादर जी' को शिक्षित करने के दायित्व को बहुत ही अच्छे ढंग से निभा रहे थे। साथ ही बाबा बुड्ढा जी के निरीक्षण में 'गतका विद्या' (सिक्ख योद्धाओं के द्वारा परंपरागत विधि से सीखलाई जानेवाली शस्त्र विद्या) को सिखने का प्रारंभ भावी गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' ने कर दिया था। **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित विद्या मेधा बुद्धी कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)|**

भावी गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' अपने समय में 'भाई गुरदास जी' से 'आदि सिक्खों की साखियां' (ऐतिहासिक प्रसंगों) का इतिहास और गुरु 'श्री अर्जन देव

साहिब जी' महाराज की शहीदी तक के समस्त इतिहास को जान चुके थे। 'भाई गुरदास जी' और 'बाबा बुड्ढा जी' के निरीक्षण में आपको शस्त्रों के 'सैन्य प्रशिक्षण' हेतु 'लोहगढ़' के किले में भेजा गया था। इस किले में सिक्ख धर्म के ६ वें गुरु 'श्री हरगोबिंद साहिब जी' की और से 'सैन्य प्रशिक्षण' दिया जा रहा था और शस्त्र विद्या का परीक्षण देकर आप जी को युद्ध कलां में 'पारंगत' किया गया था। 'भाई गुरदास जी' एवमं भाई जेठा जी के निरीक्षण के अंतर्गत ही अन्य सिक्ख एवं गुरु पुत्रों ने 'सैन्य प्रशिक्षण' की शिक्षा ग्रहण की थी। **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित विद्या मेधा बुद्धी कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)।**

लोहगढ़ के इस किले पर ही भावी गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' को शस्त्र विद्या के साथ ही धर्म की कीरत के संस्कारों से भी आत्मसात कराया गया था। भाई सत्ता जी, भाई बलवंड़ जी गुरु घर के महान रबाबी थे। उन के उपरांत 'भाई बाबक जी' इस रबाब बजाने की महान सेवा निभा रहे थे। 'भाई बाबक जी ने गुरु पुत्रों और अन्य सिक्खों को इन 'राग विद्या' और 'गुरमत संगीत' विद्या में निपुण किया था। साथ ही 'गुरमत संगीत' की बारीकियों से भी अवगत करवाया था। उस समय 'गुरुमत संगीत' के ३० रागों का इन विद्यार्थियों को गहन प्रशिक्षण दिया गया था।

उस समय भावी गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' ने 'गुरमत संगीत' का तो बहुत अच्छा प्रशिक्षण लिया अपितु आप जी ने गुरमत संगीत के एक नए राग, 'राग जैजावंती' का आविष्कार भी किया था। इस 'राग जैजावंती' का प्रथम उच्चारण आप जी ने किया था और इस राग को ३१ वें राग के रूप में 'गुरमत संगीत' में शामिल किया गया था। **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित विद्या मेधा बुद्धी कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)।**

भावी गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' ने 'मृदंग' बजाने की कला में महारत हासिल कर रखी थी। आप जी कीर्तन करते हुए 'मृदंग' पर साथ करते थे। सभी वाद्यों के साथ - साथ आप जी 'मृदंग' बजाने की कला में पारंगत थे। 'भाई गुरदास जी' के निरीक्षण के अंतर्गत ही अन्य सिक्ख एवं गुरु पुत्रों ने 'सैन्य प्रशिक्षण' की शिक्षा

ग्रहण की थी। **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित विद्या मेधा बुद्धी कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)|**

इतिहास को यदि दृष्टिक्षेप करें तो भावी गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' के द्वारा रचित ५९ पद्यों, ५७ श्लोकों को मिलाकर इस प्रकार से कुल ११६ पद्यों को 'श्री गुरु ग्रंथ साहब जी' में १५ रागों के अंतर्गत अंकित किया गया है।

भावी गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' की समस्त शिक्षा - दीक्षाओं का यदि आकलन किया जाए तो यह समक्ष आता है कि 'बाबा बुड्ढा जी, भाई गुरदास जी, रबाबी भाई बाबक जी और भाई जेठा जी' का उनकी शिक्षा - दीक्षा में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान था।

'उत्तम वैद्य' के रूप में भावी गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' ने चिकित्सा विज्ञान में भी महारत हासिल कर रखी थी और कई दुर्गम रोगों का इलाज भी किया था। आप जी को कई प्रकार की जड़ी - बूटियों की उत्तम जानकारी थी कारण गुरु 'श्री अर्जन देव साहिब जी' महाराज ने अपने कार्यकाल में तरनतारन में एक विशेष 'चिकित्सा केंद्र' बनाया था और इस केंद्र में कोढ़ के रोग से पीड़ितों का उत्तम इलाज किया जाता था। साथ ही जब लाहौर शहर 'अकाल ग्रस्त' हुआ था तो वहां पर भी रोगियों का उत्तम इलाज किया था। इन सेवाओं को उत्तम ढंग से निभाते हुए भावी गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' ने चिकित्सा विज्ञानी क्षेत्र में महारत हासिल की थी। इस 'चिकित्सा विज्ञान' की शिक्षा को भावी गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' के साथ - साथ आप जी से दो वर्ष आयु में बड़े भाई 'बाबा अटल जी' ने भी प्राप्त की थी। **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित क्रिया कर्मण्यता कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)|**

जिस प्रकार से धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादुर साहब जी' के बडे भ्राता बाबा अटल जी ने अपनी जो योग चित्तलय शक्ति के द्वारा अपने मित्र मोहन जी को पुनर्जीवित किया था, निश्चित ही बाल तेगबहादर जी भी अपनी योग चित्तलय शक्ति से इस कार्य को अंजाम दे सकते थे| **इसी से सिद्ध होता है कि धन्य - धन्य गुरु श्री तेग बहादुर साहिब जी योग चित्तलय शक्ति कलां से परिपूर्ण थे|**

धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' का ७ वर्ष से १० वर्ष तक का जीवन अत्यंत सादगी एवं त्याग और वैराग्य स्वरूप में व्यतीत हुआ था कारण इन ४ वर्षों में आप से २ वर्ष बड़े भ्राता बाबा अटल जी का निधन हो गया था साथ ही दादी जी माता 'गंगा जी' एवं परम स्नेही बाबा 'श्री चंद जी' (जिनकी आयु १०० वर्षों से भी अधिक थी) एवं उनके सबसे करीबी शिक्षक जिन्हें वह अपना आदर्श मानते थे ऐसे बाबा बुड्ढा जी का भी १७ नवंबर सन् १६३१ को १२५ वर्ष की आयु में अकाल चलाना (स्वर्गवास) कर गए थे| इन सभी कारणों से बाल 'तेग बहादुर जी' के ह्रदय में त्याग और बैराग उत्पन्न हो गया था| **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित क्रिया कर्मण्यता और विमला पारदर्शिता कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)|**

धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' का परिणय बंधन ११ वर्ष की आयु में उनसे २ वर्ष आयु में बड़ी बीबी गुजरी जी से करतारपुर (जालंधर के समीप) नामक स्थान पर बड़ी धूमधाम और पारंपरिक रीति - रिवाजों से संपन्न हुआ था| इस शुभ अवसर पर पूरे नगर को दीप मालाओं से सजाया गया था एवं विभिन्न विभिन्न प्रकार के पकवानों को बनाया गया था, पूरे नगर में पंडालों को सजाकर गुरुवाणी का प्रकाश किया गया था| बाबा बुड्ढा जी के सुपुत्र भाई भाना जी एवं उपस्थित रबारियों की और से परिणय बंधन (आनंद कारज) की रस्म अदायगी की गई थी| 'परिणय बंधन' की संपन्नता के पश्चात वर - वधू की सुंदर छवि ने उपस्थित संगतों का मन मोह लिया था। इतिहास में अंकित है:-

कहै तेग बहादर जोरी।
बिध रची रुचर रुच बौरी।।

उपस्थित संगतों की और से बधाईयों को अर्पित किया गया था। **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित कीर्ति यश प्रसिद्धी, लीला आनंद एवम् उतस्व, कांति सौंदर्य और आभा कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)|**

भावी गुरु 'श्री तेग बहादर जी' का करतारपुर में परिणय बंधन के पश्चात ही पैंदे खान से करतारपुर का चौथा युद्ध हुआ था। पैंदे खान वो अनाथ बालक था जिसे गुरु 'श्री हरगोबिंद साहिब जी' ने आश्रय देकर उसका पालन - पोषण किया था। इस बालक पैंदे खान के पालन - पोषण के लिए दो भैंसों के दूध का भी प्रबंध किया गया था। गुरु पातशाहा जी स्वयं पैंदे खान के पालक की भूमिका निभा रहे थे एवं जीवन में आवश्यक सभी सुविधाएं मुहैया करवाई थी। इस पैंदे खान का निकाह भी गुरु जी की कृपा दृष्टि से हुआ था। गुरु जी ने इस पैंदे खान की बेटी का निकाह भी करवाया था और इनके निवास के लिए भवन निर्माण भी करवाया था परंतु 'नमक हराम' पैंदे खान अपने जवाई काले खान के बहकावे में आकर स्वयं के साथियों के साथ और मुगल सरकारों की सेनाओं से मिलकर करतारपुर पर आक्रमण कर दिया था।

दूसरी और सिक्ख योद्धाओं ने भी इस युद्ध को गंभीरता से लेते हुए अपनी संपूर्ण तैयारी की थी। जब यह युद्ध प्रारंभ हुआ था तो उस समय भावी गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' ने अपनी आयु के १४ वें वर्ष में प्रवेश किया था। इस आयु में आप जी ने शस्त्र विद्या, घोडसवारी और 'तेग' नामक शस्त्र को चलाने में महारत हासिल कर ली थी। भावी गुरु 'श्री तेग बहादर जी' अपने नाम के विशेषण अनुसार 'तेग के धनी' अर्थात 'तेग बहादुर' के रूप में प्रस्थापित हो चुके थे। इस युद्ध में भावी गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' ने जब अपने 'तेग' नामक शस्त्र के जौहर दिखाने शुरू किए तो दुश्मनों ने आश्चर्यचकित होकर अपने मुंह में उंगलियों को दबा लिया था। इस युद्ध में अभूतपूर्व 'युद्ध कौशल्य' का परिचय देते हुए इस छोटी आयु के भावी गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' ने सिद्ध कर दिया था कि वो 'तेग के धनी' और शूरवीर योद्धा है। करतारपुर का युद्ध सफलता पूर्वक जीता गया था। इस युद्ध के पश्चात गुरु 'श्री हरगोबिंद साहिब जी' ने हौसला अफजाई के लिए भावी गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' के लिए कमाल के आशीर्वाद वचन कहे थे। आप जी ने प्रेम पूर्वक कहा था कि सचमुच आप 'तेग के धनी' हो, आपने अपने नाम के विशेषण अनुसार 'तेग बहादर' के नाम को सारगर्भित करते हुए इस नाम कि आपने लाज रख ली।**(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित क्रिया कर्मणयता, विद्या मेधा बुद्धी और उत्कर्षिणि प्रेरणा और नियोजन कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)।**

शिवालिक पर्वत मालाओं के पास धन्य - धन्य गुरु 'श्री हरगोबिंद साहिब जी' ने (मोहड़ी गड्ड) नींव का पत्थर रखकर किरतपुर नामक शहर बसाया था और करतारपुर युद्ध के पश्चात समय के हालात को देखते हुए गुरु पातशाहा जी ने अपने परिवार के साथ किरतपुर शहर में निवास करने आ गए थे| इस कारण से लगभग १० वर्षों तक भावी गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' का निवास भी किरतपुर शहर में हुआ था| अपनी आयु के २४ वर्षों तक भावी गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' किरतपुर नामक स्थान पर रहे थे और इसी स्थान पर आप जी ने भावी गुरु 'श्री हर राय साहिब जी' के साथ मिलकर साध - संगत की निरवैर सेवा की थी| **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित क्रिया कर्मणयता और विमला पारदर्शिता कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)|** भावी गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' और गुरु 'श्री हर राय साहिब जी' रिश्ते में चाचा - भतीजा लगते थे|

धन्य - धन्य गुरु 'श्री हरगोबिंद साहिब जी' ने धन्य - धन्य गुरु 'श्री नानक देव साहिब जी' की ज्योत के रूप में गुरु 'श्री हर राय साहिब जी' को सातवें गुरु के रूप में निरूपित किया था| गुरु श्री हरगोबिंद साहिब जी के सचखंड़ गमन के पश्चात गुरु परिवार बकाला नामक स्थान पर (माता गंगा जी के मायका) निवास करने हेतु आ गया था| इसी स्थान पर धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' ने अपना निजी स्थान बनाकर कठोर तप किया था कारण भजन बंदगी से 'शहीदी' के बीच का सफर बहुत ही ऊंचा और पवित्र मार्ग था। जिसके लिए 'आत्म बल' प्राप्त करना बहुत ही आवश्यक था। इस प्रकार से भावी गुरु 'श्री तेग बहादुर जी' बाबा बकाला नामक स्थान पर निवास करते हुए पूरे भक्ति भाव से अपना जीवन व्यतीत कर 'आत्म बल' प्राप्त कर रहे थे। **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित क्रिया कर्मण्यता, उत्कर्षिणि प्रेरणा और नियोजन कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)|**

धन्य - धन्य गुरु 'श्री हर राय साहिब जी' के पश्चात गुरु 'श्री हर कृष्ण साहिब जी' को धन्य - धन्य गुरु 'श्री नानक देव साहिब जी' की आठवीं ज्योत के रूप में गुरता गद्दी पर मनोनीत किया गया था| उस समय दिल्ली में फैले हैजे नामक

बीमारी से हजारों लोगों की जान जा रही थी तो उस समय गुरु 'श्री हर कृष्ण साहिब जी' ने अपनी निष्काम सेवाओं को अर्पित किया था और आप जी स्वयं भी हैजे के रोग से ग्रस्त हो गए थे| अपने अंतिम समय में आप जी ने भविष्य के भावी गुरु के लिए अपना अंतिम शब्द 'बाबा बकाला' उद्घोषित किया एवं सचखंड गमन कर गए थे| उस समय कई झूठे गुरु 'बाबा बकाला' में अपनी मंजी (आसन) लगाकर, भावी गुरु के रूप में स्वयं को निरूपित करने लगे थे| उस समय के सबसे धनी व्यापारी मक्खन शाह लबाना ने अपने लाव - लश्कर के साथ पहुंच कर, बकाला नामक स्थान पर अपनी छावनी को स्थापित किया था| धनी व्यापारी मक्खन शाह लबाना के पास उस समय २०० समुद्री जहाजी बेड़े थे एवं आयात - निर्यात का उस समय का वह सबसे बड़ा व्यापारी था और हमेशा एक बड़ी सेना अपने साथ रखता था, साथ ही व्यापारी मक्खन शाह लबाना गुरु घर का अनन्य भक्त था| उस तात्कालिन समय में एक बार यात्रा करते समय मक्खन शाह जी का बेड़ा समुद्री तूफान में फंस गया और बचने की कोई उम्मीद नहीं रही तो आप जी ने 'अरदास' (प्रार्थना) का सहारा लिया था। उस समय मक्खन शाह लबाना की आयु ७५ वर्ष की थी। आप जी गुरबाणी के रसिया थे और आपका 'अरदास' पर पूरा विश्वास था। उस संकट के समय आप जी ने जपजी साहिब का पाठ कर 'अरदास' की थी और आप भी का जहाजी बेड़ा डूबने से बच गया था। जिसे महिमा प्रकाश ग्रंथ में इस तरह से अंकित किया गया है:-

कर चित इकागर जप के पड़ा।

पुनि सतिगुरु जी का कीआ धिआन।

मन मिटे भरम गुरि लोह पछान॥

(महिमा प्रकाश साखी ३ महला ९)

अर्थात् उस समय आप जी की 'अरदास' परवान हुई थी और जहाजी बेड़ा डूबने से बच गया था।

मक्खन शाह लुबाना जी की उस समय 'अरदास परवान हुई थी। कई सशंकित लोग कहते हैं कि यह कैसे संभव है? गुरु 'श्री तेग बाहदर साहिब जी' और जहाजी बेड़े के मध्य कोसों की दूरी थी कैसे डूबते हुए जहाजी बेड़ा बच गया था? **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित ईशान आधिपत्य और क्रिया कर्मण्यता कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)।**

गुरबाणी का सहारा लेकर हमें 'अरदास' पर पूर्णतया भरोसा करना चाहिए। गुरवाणी में अंकित है:-
तीने ताप निवारणहारा दुख हंता सुख रासि।

ता कउ बिघनु न कोऊ लागै जा की प्रभु आगै अरदासि॥
(अंग क्रमांक ७१४)

तीने ताप अर्थात् यानि की यदि हम विश्वास पूर्वक 'अरदास' करें तो तन के, मन के और बाहर के दुख तुरंत दूर हो जाते हैं।

गुरु जी हमारी 'अरदास' कैसे तुरंत परवान करते हैं? इसे गुरबाणी में इस तरह अंकित किया गया है:-
अपुने सेवक की आपे राखै आपे नामु जपावै।

जह जह काज किरति सेवक की तहा तहा उठि धावै॥

सेवक कउ निकटी होइ दिखावै।

जो जो कहै ठाकुर पहि सेवकु ततकाल होइ आवै॥
(अंग क्रमांक ४०३)

अर्थात् जो - जो सेवक गुरु के समक्ष सच्चे मन से 'अरदास' करता है उस की 'अरदास' तत्काल सुनी जाती है।

दूर रहकर 'अरदास' कैसे सुने जा सकती है? इसका उत्तम उदाहरण गुरबाणी में इस तरह अंकित है:-

जैसी गगनि फिरंती ऊड़ती कपरे बागे वाली।

ओह राखै चीतु पीछै बिचि बचरे

नित हिरदै सारि समाली||

तिउ सतिगुरु सिख प्रीति हरि हरि की।

गुरु सिख रखै जीअ नाली॥
(अंग क्रमांक १६८)

अर्थात् जिस प्रकार से कुंज (सारस पक्षी) अपने बच्चों को हजारों किलोमीटर पीछे छोड़कर चोगा चुग कर अपने बच्चों को पालती है। ठीक उसी प्रकार से गुरु भी अपने सिक्खों की प्रित पालना करते हैं।

इसे गुरुवाणी में इस तरह से भी अंकित किया गया है:-

ऊडे ऊडि आवै सै कौसा तिसु पाछै बचरे छरिआ॥

तिन कवणु खलावै कवणु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ॥
(अंग क्रमांक १०)

अर्थात कुंज (सारस पक्षी) साइबेरिया से लगभग ८००० किलोमीटर की दूरी पर आकर यहां दाने चुगती है और वह ८००० किलोमीटर स्थित अपने बच्चों को पालती है।
इसी तरह से गुरुवाणी कहती है:-

कुंमी जल माहि तन तिसु बाहरि पंख खीरु तिन नाहि।
(अंग क्रमांक ४८८)

अर्थात कछुए पानी में रहते हैं और अंडे प्रजनन के लिए पानी से बाहर आकर अंडे प्रजनित कर पुनः पानी में चले जाते हैं। कछुए के पास पानी से बाहर उड़ के आने के लिए पंख नहीं होते हैं और ना ही अंडों से प्रजनित बच्चों के लिए दूध होता है। कछुए पानी के भीतर अंडों से बच्चे बाहर आने के लिए ध्यान लगाते हैं। जब बच्चे अंडे से बाहर आते हैं तो स्वयं पानी में अपनी ध्यानावस्था माता के समीप पहुंच जाते हैं।

जब कुंज (सारस पक्षी) ८००० किलोमीटर दूर रहकर अपने बच्चों को बचा सकती है और कछुए पानी के भीतर से ध्यान लगा कर के अपने बच्चों को बचा सकते है तो धन्य - धन्य 'श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी' 'बाबा बकाला' में बैठकर मक्खन शाह लुबाना का जहाजी बेड़ा क्यों नहीं बचा सकते हैं? **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित ईशान आधिपत्य और क्रिया कर्मण्यता कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)|**

'बाबा बकाला' नामक स्थान पर मक्खन शाह लबाना पूरे ठाट - बांट और रुबाब से अपने सैनिकों के साथ गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' से मिलने गये तो गुरु जी ने मक्खन शाह लबाना को रोक कर गुरु घर में 'नैतिकता' के साथ उपस्थित होने का उपदेश दिया था। मक्खन शाह लुबाना को समझ आ गई थी और जब उन्होंने कुछ मोहरे गुरु जी के समक्ष रखकर नतमस्तक होकर नमस्कार किया तो गुरु जी ने मुस्कुराकर कर कहने लगे; जिसे महिमा प्रकाश ग्रंथ में इस तरह से अंकित किया गया है:-

सुन सिख डूबदी नाउ तुम, हम कंढे दीन लगाइ।

कंधे मुहि घासी लगी, किउ पुजा रखे दुराइ॥

जब मक्खन शाह ने मोहरे रखकर नमस्कार किया तो गुरु जी ने जो वचन उद्‌गारित किए; वो महिमा प्रकाश ग्रंथ में इस तरह से अंकित है:-

गुरु घर की जो अहै उपाइन ।

सो दीजहि कहि राखहु आइन।

अर दसौंद गुरु को है जैता।

अरपनि दरबु करहु अबि तेता॥

और गुरु जी ने कहा अर्थात् जब तुम्हारा जहाजी बेड़ा डूब रहा था तो आपने 'अरदास' कर कुछ और कहा था और यहां पर कुछ और कर रहे हो! **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित ईशान आधिपत्य, योग चित्तलय, सत्य यथार्थ, उत्कर्षिणि प्रेरणा और नियोजन और क्रिया कर्मण्यता कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)|**

मक्खन शाह लबाना समझ चुका था कि सच्चा गुरु कौन है? उन्होंने और उनके परिवार ने तुरंत गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' के चरणों में नमस्कार किया था। दरबार में कुछ देर बैठने के पश्चात और वार्तालाप होने के पश्चात आप जी ने खुशी - खुशी निवास स्थान की छत पर चढ़कर अपना पल्ला हवा में लहराते हुए जोर की घोषणा की थी।

गुरु लादो रे! गुरु लादो रे! गुरु लादो रे!

और इसी तरह से घोषणा देते हुए उपस्थित संगतो को संबोधित करते हुए कहा कि भोली संगतों गुमराह मत होना सच्चे गुरु की खोज हो चुकी है। बाकी के सारे दावेदार झूठे गुरु हैं; सच्चे गुरु धन्य - धन्य श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी हैं और इस स्थान पर आसीन हैं।

उस समय बाबा बकाला नामक स्थान पर आसीन झूठा गुरु धीरमल इस घटना से अत्यंत क्रोधित हो गया था और उसने धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' के डेरे पर अचानक आक्रमण किया एवं गुरु पातशाहा जी के उपर गोली भी चलाई थी| जब मक्खन शाह लबाना को इस हमले का संज्ञान हुआ तो मक्खन शाह ने धीरमल पर अपनी सेना के साथ आक्रमण कर उसकी मुश्कें बांधकर उसे गुरु पातशाहा जी के सम्मुख उपस्थित किया था|

गुरु पातशाहा जी के अनन्य भक्त मक्खन शाह लुबाना ने अपना फर्ज अदा किया था और गुरु जी के चरणों में निवेदन किया था इन दोषियों को सख्त से सख्त सजा दी जाए। 'वैराग्य की मूरत' शांत चित गुरु पातशाहा जी ने उस समय जो वचन किए थे उसे इस तरह से अंकित किया गया है:-

भलो धीरमल धीर जी, भलो धीरमल धीर।

अर्थात भाई धीरमल तेरा भला होए। ओ धीरमल तेरा भला हुए।

धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' ने अपनी वाणी में अंकित किया है:-
मिठ बोलड़ा जी हरि सजणु सुआमी मोरा।

हउ संमलि थकी जी ओहु कदे ना बोलै कउरा।

कउड़ा बोलि न जाने पुरन भगवानै।

अउगणु को न चितारे॥
(अंग क्रमांक ७८४)

जब धीरमल ने आपसे माफी मांगी तो आप जी ने गुरुवाणी के अनुसार :-
जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा॥
(अंग क्रमांक ५४४)

दोषी धीरमल को गुरु जी ने बक्श दिया था और गुरु जी ने उस समय वचन किए थे जिसे इतिहास में इस तरह से अंकित किया गया है:-
कामु क्रोधु काइआ कउ गालै॥

जिउ कंचन सोहागा ढ़ालै॥
(अंग क्रमांक ९३२)

अर्थात् है; धीरमल यह काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार शरीर को समाप्त कर देता है। तेरा उस तरह से भला हो जैसे 'सोने में सुहागा'!

धीरमल द्वारा लूटी गई मूल्यवान वस्तुओं को भाई मक्खन शाह लुबाना पुनः वापस ले आए थे। साथ ही धीरमल के अधीन आदि गुरु ‘श्री ग्रंथ साहिब जी' की बीड़ (ग्रंथ) को भी सम्मान पूर्वक वापस लाया गया था।

गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' ने समस्त मूल्यवान वस्तुओं को धीरमल को वापस कर दी थी एवं आदि ग्रंथ साहिब जी की बीड़ (ग्रंथ) भी धीरमल को वापस कर दिया था। यह बीड़ (ग्रंथ) साहिब वर्तमान समय में करतारपुर साहिब गुरुद्वारे में सुशोभित है।

११ अगस्त सन् १६६४ के दिवस धन्य - धन्य गुरु ‘श्री नानक देव साहिब जी’ की नौवीं ज्योत के रुप में गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' को गुरता गद्दी का तिलक सुशोभित किया गया था। ९ अक्टूबर से लेकर २२ नवंबर तक ४३ दिनों तक गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' ने संगतों को दर्शन - दीदारें देकर उनका उद्धार किया था और 'बाबा बकाला' की धरती को भाग्य लगाये थे। गुरु जी ने उपस्थित संगतों के बीच इच्छा जाहिर कर उन स्थानों पर, उन गुरुधामों पर जाना चाहिए जहां मसंदों ने मनमानी कर आप स्वयं ही गुरु के रूप में आसीन हो गए थे। जिसके कारण संगतें भ्रमित होकर गुमराह हो रही थी। इन भ्रमित संगतों को सही ज्ञान देने के लिए ऐसे स्थानों पर जाना आवश्यक हो गया था।

इस यात्रा के दौरान गुरु जी ग्राम 'कालेके' ग्राम 'तसरिका' और ग्राम 'लेहल' होते हुए २२ नवंबर सन् १६६४ को आप जी संगतों समेत 'श्री दरबार साहिब जी' अमृतसर में पहुंचे थे| उस समय हर जी 'श्री दरबार साहिब जी' पर कब्जा जमाए बैठा था और उसने 'श्री दरबार साहिब जी' के प्रवेश द्वार को बंद कर दिया था| हरि जी भयभीत था कि कहीं मेरा कब्जा ना चला जाए? हरि जी ने दर्शनी ड्योढ़ी के द्वारों को बंद करवा दिया था। हरि जी वहां से दूर भाग कर अपने ग्राम 'हेहर' नामक स्थान पर चला गया था। गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' बेर के पेड़ के चारों और बने चबूतरे पर आसीन हुए थे और कुछ समय पश्चात आप जी अपने गंतव्य स्थान की और काफिले सहित मार्गस्त हो गए थे। भाई मक्खन शाह लुबाना ने गुरु जी से निवेदन किया कि यदि आप आदेश करें तो मैं इन सभी दोषियों को सबक सिखा दूंगा परंतु गुरु जी ने वचन उच्चारित किए कि यह अपने कर्मों के फलों का स्वयं ही भुगतान करेंगें। **<u>(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित ज्ञान नीर क्षीर विवेक एवम् संतोष कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)|</u>**

अमृतसर से मार्गस्थ होकर गुरु पातशाहा जी ग्राम 'घुकेवाली', ग्राम वल्ले, तरनतारन साहिब, खंडूर साहिब होते हुये अपने पैतृक (जद्दी) ग्राम गोईंदवाल साहिब जी में पहुंचे थे| तत्पश्चात गुरु साहिब जी खेमकरण नामक स्थान पर पहुंचे थे| इस स्थान पर एक गुर सिक्ख भाई धिंगाणा जी ने गुरु जी से निवेदन किया था कि है सच्चे पातशाह जी जब तक मेरी श्वांस चलती हैं तब तक मेरे से किसी के लिए कुछ बुरा ना हो; मैं अपने जीवन की आखिरी श्वांस तक प्रभु की बंदगी करना चाहता हूं। आप भी मुझ पर कृपा करें जब मैं अपनें श्वांसों को छोड़ो तो आप भी मुझे दर्शन देने अवश्य पधारें।

गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' ने इस प्रकार से वचन किए भाई धिंगाणा जी कोई पता नहीं:-

कहा बिसासा इस भाँडे का इतनकु लागै ठनका॥
(अंग क्रमांक १२५३)

अर्थात् भाई धिंगाणा जी कोई पता नहीं कि हम तेरे से पहले ही श्वांस को छोड़कर चले जाएं। भाई धिंगाणा जी ने पुनः निवेदन कर कहा कि पातशाह जी मेरा एक निवेदन परवाण करना कि जब आप भी अपने श्वांसों का त्याग करें तो इतनी कृपा करना कि उस समय मैं भी अपनी श्वांसों को त्याग दो क्योंकि मैं आप जी का विछोड़ा सहन नहीं कर सकता हूं।

इतिहास गवाह है जब ग्यारह वर्षों के पश्चात गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' ने दिल्ली के चांदनी चौक में धर्म की रक्षा के लिए अपना शीश कटवा कर 'शहीद' हुये थे तो उसी समय इस स्थान पर जहां भाई धिंगाणा जी निवास करते थे। भाई धिंगाणा जी चादर ओढ़ कर लेट गए थे और उसी समय उन्होंने अपना शरीर त्याग कर दिया था। उस समय स्थानीय संगतों को ज्ञात हो गया था कि धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' ने भी अपना शरीर त्याग दिया है।

वर्तमान समय में इस ग्राम खेमकरण में भाई चैन जी की स्मृति में गुरुद्वारा 'चैन साहिब जी' सुशोभित है। और इस स्थान पर खेतों के मध्य गुरुद्वारा 'धिंगाणा साहिब' भी सुशोभित है। जिस स्थान पर गुरु पातशाहा जी विराजमान हुए थे उस स्थान पर गुरुद्वारा 'गुरुसर साहिब' सुशोभित है। इस स्थान पर गुर सिक्ख रघुपति राय जी ने गुरु जी को यात्रा करने हेतु भेंट स्वरूप घोड़ी भी अर्पित की थी। इस स्थान पर गुरु जी ने स्थानीय संगतों को नाम - वाणी से जुड़ा था। **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित सत्य यथार्थ कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)।**

धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' ने धन्य - धन्य गुरु 'श्री नानक देव साहिब जी' के पश्चात लोक - कल्याण के लिए सर्वाधिक यात्रा की थी। इस सम्मेलन का मुख्य विषय ही गुरु पातशाहा जी की पूर्व दिशा में की गई यात्राओं के संबंध में हैं और शब्दों की मर्यादाओं को सीमित रखा गया इसलिए मैं उस विषय को विस्तार से ना लिखते हुए संक्षेप में लिखकर गुरु पातशाहा जी की सोलह कलाओं को ही मैंने इस शोध पत्र में विस्तार से वर्णित करने का निश्चय किया है।

धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' ने भारत भूमी के विभिन्न प्रांतों की यात्रा की थी। विशेष रूप से सुबा पंजाब और हरियाणा में आप जी ने यात्राएं कर सिक्खी के बूटे को प्रफुल्लित किया था। आप जी ने बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड होते हुए आसाम तक की यात्रा की थी। साथ ही साथ आप जी उड़ीसा, दिल्ली, हरियाणा के मार्ग से होते हुए पुनः पंजाब में पधारे थे। गुरु जी द्वारा आयोजित यात्राएं धर्म प्रचार - प्रसार के लिए तो थी ही अपितु आप जी ने इन यात्राओं के माध्यम से अनेकों आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक उन्नयन और मानव जाति के कल्याण के लिए अनेक रचनात्मक कार्यों को अंजाम दिया था। आप जी ने इन यात्राओं के माध्यम से अंधविश्वास, रूढ़ियों की आलोचना कर नए आदर्शों को प्रस्तावित किया था। आप जी ने इन यात्राओं के माध्यम से अनेक रोगियों को रोग से मुक्त किया था। आप भी उत्तम वैद्य और आयुर्वेद चिकित्सक थे। जहां - जहां भी आप जी गये उन स्थानों पर लोक - कल्याण हेतु धर्मशालाएं बनाई। कई कुएं खुदवाकर स्वच्छ पीने के पानी का इंतजाम किया था। आप जी ने अपने जीवन में अनेक परोपकार के कार्य किए थे। आप जी उत्तम वास्तु शिल्पकार थे, आप जी ने १९ जून सन् १६६५ को ग्राम सहोटा के समीप ऊंचे टीले पर मोहरी गड्ड (नींव का पत्थर) रखकर चक नानकी (श्री आनंदपुर साहिब जी) नगर का निर्माण किया था। उस समय में इस नगर की रचना अपने आप में वास्तुशिल्प का अनोखा अविष्कार थी। **(इस स्वर्णिम यात्राओं के में इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित श्री धन संपदा, भू अचल संपत्ती, कीर्ती यश प्रसिद्धी, मधुर वाणी की सम्मोहकता, लीला आनंद एवम् उत्सव, कांति सौंदर्य और आभा, विद्या मेधा बुद्धी, विमला पारदर्शिता, उत्कर्षिणि प्रेरणा और नियोजन, ज्ञान नीर क्षीर विवेक एवम् संतोष, क्रिया कर्मण्यता, योग चित्तलय, प्रहवि अत्यंतिक विनय, सत्य यथार्थ, ईशान आधिपत्य और अनुग्रह उपकार ऐसी कुल १६ कलाओं की अनुभूती के दर्शन होते है)।**

उस समय के हुक्मरान जुल्मी बादशाह औरंगजेब की हठधर्मिता थी कि उसे अपने धर्म के अतिरिक्त किसी दूसरे धर्म का वजूद मंजूर नहीं था। औरंगजेब ने सभी आम जनता को इस्लाम धर्म स्वीकार करने का सख्त आदेश दे दिया था। उस समय के आदेशानुसार इस्लाम स्वीकार करो या मृत्यु को गले लगा लो, इस आदेश

का जोर - जुल्म से पालन किया जा रहा था। जबरदस्ती तलवार की धार पर लोगों को इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिए मजबूर किया जा रहा था। इससे अन्य धर्म के लोगों का जीवन अत्यंत कठिन हो गया था। उस समय औरंगजेब के अत्याचार से पूरे देश में त्राहि - त्राहि मच गई थी। उस समय कश्मीर के ब्राह्मणों ने पंडित कृपाराम जी के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल के रूप में गुरु जी से मिलकर जुल्मी औरंगजेब से बचाने के लिए गुहार लगाई थी। उस समय गुरु जी ने वचन किए कि यदि कोई महापुरुष शहादत देगा तो हिंदू धर्म को बचाया जा सकता है। निकट खड़े बाल गोबिंद राय जी ने उस समय केवल ९ वर्ष ६ महीने की आयु की अवस्था में अपने पिता गुरु श्री तेग बहादर साहिब जी को वचन किए थे कि पिताजी इस समय आप से बड़ा महापुरुष कौन हो सकता है? गुरु जी ने कश्मीरी पंडितों के माध्यम से उस समय के हुक्मरान औरंगजेब को सूचना भिजवाई थी कि यदि गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' ने इस्लाम कबूल कर लिया तो हम सभी भी अपना धर्म परिवर्तन कर लेंगे। **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित अनुग्रह उपकार कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)|** जुल्मी औरंगजेब ने गुरु जी की गिरफ्तारी के आदेश जारी कर दिए थे परंतु गुरु जी स्वयं अपने चुनिंदा सेवादार साथियों सहित दिल्ली की और प्रस्थान कर गए थे।

गुरु जी और उनके साथी भाई सती दास जी, भाई मती दास जी एवं भाई दयाला जी को मुगल सैनिकों ने गिरफ्तार कर अनेकों प्रकार की शारीरिक यातनाएं दी थी। भाई हीरानंद जी के सुपुत्र अमर शहीद भाई मती दास जी और भाई सती दास जी ने गुरु दरबार में अपनी सेवाओं को समर्पित किया था| ऐतिहासिक तथ्यों से ऐसा प्रतीत होता है कि आयु में भाई मती दास जी, भाई सती दास जी से बड़े थे| भाई मती दास जी को गुरु दरबार का दीवान भी मनोनीत किया गया था एवं भाई सती दास जी फारसी, अरबी, उर्दू एवं ब्रजभाषा के विद्वान थे| आप जी ने गुरु पातशाहा जी के मुखारविंद से उच्चारित वाणीयों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद भी किया था साथ ही गुरबाणी को तुरंत लिख कर सुरक्षित भी आप जी करते थे| भाई सती दास जी उत्तम दुभाषीये थे एवं गुरबाणी को सरल और आम भाषा में लिखकर संगतों को पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य भी आप भी करते थे| इस सरल आम भाषा ने ही भविष्य में हिंदी और उर्दू भाषा का रूप धारण किया था|

जब धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' को दिल्ली के चांदनी चौक में क्रूर यातनाएं देकर शहीद किया गया था तो उस समय की समस्त आंखों देखी घटनाओं का विवरण भी भाई सती दास जी ने स्वयं अंकित किया था| इस पूरे महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक साहित्य को औरंगजेब के सिपाहियों ने आपसे जबरदस्ती लेकर नष्ट कर दिया था| धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' जब अपनी धर्म प्रचार - प्रसार की यात्रा के लिये देशाटन किया था तो अमर शहीद भाई मती दास जी और भाई सती दास जी ने गुरु पातशाह जी के सानिध्य में रहकर अपनी उत्तम सेवाएं प्रदान की थी| धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' दोनों ही भाइयों का अत्यंत लाड करते थे| उस तात्कालीन समय में गुरु पातशाहा जी ने स्वयं दोनों भाईयों के शीश पर दस्तार सजा के सम्मान प्रकट किया था|

९ नवंबर सन् १६७५ को अमर शहीद भाई मती दास जी को भी इस्लाम ना कबूल करने के कारण बांधकर शरीर के बीच से आरे से चीर कर दो टुकड़े कर दिए थे कारण जब धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' को एक ऐसे पिंजरे में कैद किया गया था जिस में कोई भी व्यक्ति ना ठीक से खड़ा हो सकता था और ना ही ठीक से लेट सकता था और ना ही ठीक से बैठ सकता था साथ ही इस पिंजरे नुमा जंगले में जगह - जगह नुकिले चाकू बांध के रखे हुए थे| जब गुरु पातशाहा जी इस असहनीय दर्द को सहन कर, उस अकाल पुरख का बहाना मान कर, शुक्र मना रहे थे तो गुरु पातशाहा जी की इस अवस्था को देखकर भाई मती दास जी अत्यंत क्रोधित हो गए थे और उन्होंने गुरु पातशाहा जी से हुकुम मांग कर कहा था कि यदि आप आदेश करें तो मैं अपनी आध्यात्मिक शक्तियों के जोर पर इस मुगल सल्तनत की दिल्ली से लेकर लाहौर तक, ईट से ईट बजा सकता हूं| जब इस घटना की चुगली उस समय में तैनात मुगल सैनिकों ने काजी से की तो काजी ने आदेश दिया था कि भाई मती दास जी की जुबान के दो टुकड़े कर दिए

जाएं और इसी आदेश को पालन करने हेतु अमर शहीद भाई मती दास जी को लकड़ी की चौखट में बांधकर आरे से उनके दो टुकड़े कर दिये गये थे|

अमर शहीद भाई मती दास जी को शहीद करने से पहले उन्हें पुन: इस्लाम धर्म स्वीकार करने का लालच दिया गया था| उस समय अमर शहीद भाई मती दास जी ने उन जल्लादों से कहा था कि यदि मैं इस्लाम धर्म स्वीकार कर लो तो क्या मेरी मृत्यु नहीं होगी? इस पर जल्लादों ने कहा था कि यह कैसे संभव है? मृत्यु तो प्रत्येक व्यक्ति की होती है तो उन्होंने हंस कर उत्तर दिया था कि मृत्यु का आलिंगन करना है तो मैं अपने धर्म में रहकर ही मृत्यु को गले लगाउंगा| उस समय काजी के और से अमर शहीद भाई मती दास जी को पुन: लालच देकर कहा गया कि यदि आपने इस्लाम धर्म को स्वीकार कर लिया तो आपको जमीन - जायदाद दी जायेगी, हूरों के टोले भेंट स्वरुप दिये जायेंगें एवम् बेशकिमती वस्तुएं आपके कदमों तले होगी; उस कठिन समय में भाई मतीदास जी ने दृढ़ता से उत्तर देकर कहा था की मुझसे इस्लाम कबुल करवाना पत्थर में से दूध निकालने के जैसा होगा, इस उत्तर को सुनकर वातावरण निशब्द: हो गया था| जब अमर शहीद भाई मती दास जी को शहीद किया जा रहा था तो उनसे पूछा गया कि आप की अंतिम इच्छा क्या है? तो उन्होंने कहा था कि मेरा मुंह गुरु पातशाहा जी के सम्मुख कर दिया जाए| जब अमर शहीद भाई मती दास जी के शरीर के दो टुकड़े कर दिए गए तो भी उनके शरीर से उनके द्वारा उच्चारित जपु जी साहिब के पाठ की आवाज सुनाई पड़ रही थी| जब भाई मती दास जी के शीश पर आरा चलाया गया तो उन्होंने एकाग्र होकर जपु जी साहिब का पाठ प्रारंभ कर दिया था और जब आरे से काट कर उनके शरीर के दो टुकड़े हो गए थे तो उसके पश्चात भी उनके शरीर से जपु जी साहिब के पाठ की आवाज आ रही थी, तात्पर्य यह है कि अमर शहीद भाई मती दास जी का आध्यात्मिक बल इतना अधिक था कि उन्होंने जब तक जपु जी साहिब का पाठ पूरा नहीं कर लिया तब तक उन्होंने अपने प्राण नहीं छोड़े थे

आध्यात्मिक की इस सर्वोच्च अवस्था को धन्य - धन्य गुरु 'श्री ग्रंथ साहिब जी' में इस तरह अंकित किया गया है:-

गुरमुखि रोमि रोमि हरि धिआवै||
नानक गुरमुखि साचि समावै||
(अंग क्रमांक ९४१)

अर्थात् जो गुरमुख पुरुष होता हैं वह रोम - रोम से ईश्वर का ध्यान करता रहता है, हे नानक! इस प्रकार गुरमुख परम सत्य में ही विलीन हो जाता है| इससे यह सिद्ध होता कि एक आम इंसान का तो केवल मुख और जुबान ही बोलती है परंतु गुरमुख इंसान के शरीर पर स्थित करोड़ों रोम - रोम उस अकाल पुरख के नाम मे विलीन होकर बोलते हैं| शरीर के दो टुकड़े होने के पश्चात भी सर्वोच्च ध्यान की अवस्था में अमर शहीद भाई मती दास जी के शरीर का रोम - रोम जपु जी साहिब का पाठ कर रहा था और पाठ साहिब संपूर्ण होने के पश्चात ही अमर शहीद भाई मती दास जी ने अपने प्राणों का त्याग किया था| अमर शहीद भाई मती दास ने हंसते - हंसते शहीदी का जाम पिया था। आप जी अपनी अंतिम सांस तक आप जपु जी साहिब जी का पाठ करते रहे थे। १० नवंबर सन् १६७५ को दिल्ली के चांदनी चौक में अमर शहीद भाई सती दास जी ने जब इस्लाम धर्म स्वीकार करने से इंकार कर दिया तो उन्हें रुई में लपेट कर जिंदा जलाया गया था। अमर शहीद भाई सती दास जी ने जुल्म के खिलाफ लड़ते हुए हंसते - हंसते शहीदी का जाम पिया था। १० नवंबर सन् १६७५ को तरह जुल्मी मुगल सेना ने भाई दयाला जी को एक बड़े बर्तन में पानी डालकर उबालकर शहीद कर दिया था। अमर शहीद भाई मती दास जी और भाई सती दास जी साथ ही अमर शहीद भाई दयाला जी गुरु जी के परम - श्रद्धालु और हमेशा साथ में रहने वाले अत्यंत प्रिय निकटवर्ती साथी थे और इन्हें अपने आध्यात्मिक बल से ध्यान की सर्वोच्य अवस्था प्राप्त थी|

१० नवंबर सन् १६७५ को तरह जुल्मी मुगल सेना ने भाई दयाला जी को एक बड़े बर्तन में पानी डालकर उबालकर शहीद कर दिया था। **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित योग चित्तलय और ईशान आधिपत्य कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)।**

११ नवंबर सन् १६७५ को (वर्तमान समय से ३४७ वर्ष पूर्व) गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' के समक्ष समय के हुक्मरानों ने तीन शर्तों को रखा था। कोई करामत दिखाओ, या इस्लाम धर्म को कबूल कर लो और यदि दोनों शर्तो को मानने को तैयार नहीं हो तो मृत्यु के लिए तैयार हो जाओ। ऐसे कठिन समय में पूरे देश की आंखें गुरु जी के फैसले पर टिकी हुई थी। गुरु जी ने इंसानियत की जमीर को जिंदा रखने के लिए स्वयं की शहादत का फैसला लिया था। सर्व कला संपूर्ण धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' अपनी आध्यात्मिक शक्ति के द्वारा चाहे जो करामत दिखा सकते थे परंतु इंसानियत को जुल्म के खिलाफ आवाज उठाने का संदेश देने के लिए आपके द्वारा लिया गया फैसला इस पूरे मुल्क की तकदीर बदलने वाला था। विश्व के इतिहास में ऐसा कोई उदाहरण मौजूद नहीं है कि किसी दूसरे के धर्म को बचाने हेतु स्वयं की शहादत को अर्पित कर देना। आप जी के द्वारा इंसानियत के जमीर को नंगा होता हुआ देखा नहीं गया था। इसलिए अपनी शहादत की चादर से आप जी ने इंसानियत के जमीर को ढककर इंसानियत अस्मत को बेआबरु होने से बचा लिया था। **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित योग चित्तलय और ईशान आधिपत्य कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)।** जिसे एक कवि ने इस तरह से शब्दांकित किया है:-

तेग बहादुर के चलत भयो जगत में शोक॥
है है है सब जग भयो जै जै जै सुर लोक॥

धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' की शहीदी से पूरे जगत में शोक की लहर फैल गई थी और दुनिया में हाहाकार मच गया था परंतु धरती तो धरती अपितु स्वर्ग लोक में भी गुरुजी की शहादत की जय जयकार गूंज उठी थी।

उस समय गुरु जी के परम भक्त भाई लक्खी शाह बंजारे ने गुरु जी के धड़ का संस्कार अपने घर को आग लगाकर किया था। वर्तमान समय में इस स्थान पर

धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' की स्मृति में गुरुद्वारा रकाबगंज की विलोभनीय इमारत दिल्ली में सुशोभित है। भाई जैता जी ने मुगल सैनिकों की आंख में धूल झोंक कर गुरु जी के शीश को लेकर श्री आनंदपुर साहिब की और प्रयाण किया था। उस समय गुरु 'श्री गोबिंद सिंघ साहिब जी' ने भाई जैता जी को 'रंग रेटा, गुरु का बेटा' की उपाधि से सुशोभित कर सम्मानीत किया था। **(इस स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित ईशान आधिपत्य कलां की अनुभूती के दर्शन होते है)।**

इस दुनिया में गुरु साहिब के दर्शाए मार्ग पर चलकर ही अमन और शांति कायम हो सकती है। सत्ता का गरुर और जोर - जुल्म से आज तक कोई विजय प्राप्त नहीं कर सका है। अंत में इंसानियत के जमीर के रक्षक धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' की पावन - पुनीत - पवित्र ३४७ वीं शहादत को समर्पित चंद पंक्तियां:-

तिमिर घना होगा तमा लंबी होगी।
पर तमस से विहान रुका है क्या?
ज्ञान के विहान का विधान रुका है क्या?
इंसानियत की जमीर का पहरेदार रुका है क्या?
बाहुबल के दम पर धर्म का अवसान हुआ है क्या?
मिट गए मिटाने वाले गुरुओं के ज्ञान के सम्मुख,
शमशीर के वार से धर्म का विहान रुका है क्या?

(धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' के अनमोल स्वर्णिम इतिहास में गुरु पातशाहा जी से संबधित श्री धन संपदा, भू अचल संपत्ती, कीर्ती यश प्रसिद्धी, मधुर वाणी की सम्मोहकता, लीला आनंद एवम् उत्सव, कांति सौंदर्य और आभा, विद्या मेधा बुद्धी, विमला पारदर्शिता, उत्कर्षिणि प्रेरणा और नियोजन, ज्ञान नीर क्षीर विवेक एवम् संतोष, क्रिया कर्मण्यता, योग चित्तलय, प्रहवि अत्यंतिक विनय, सत्य यथार्थ, ईशान आधिपत्य और अनुग्रह उपकार कलां इस प्रकार से सोलह कलां अर्थात् सर्व कलां संपूर्ण की अनुभूती के दर्शन होते है)।

इंसानियत की जमीर के रखवाले, 'सर्व कलां संपूर्ण' ऐसे महान धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' की महान शहादत को सादर नमन!

विशेष नोट:

१. गुरु 'श्री ग्रंथ साहिब जी' के पृष्ठों को गुरुमुखी में सम्मान पूर्वक 'अंग' कहकर संबोधित किया जाता है|

२. गुरुबाणी के पद्यों का हिंदी अनुवाद 'गुरुबाणी सर्चर ऐप' को मानक मानकर किया गया है|

३. मेरे इस द्वितीय शोध पत्र को लिखने में यदि कोई त्रुटि हो तो अंजान बच्चे समझकर बक्शना जी, 'संगत बक्शनहार है':-

भुलण अंदरि सभु को अभुलु गुरु करतारु ||
(अंग क्रमांक ६१)

अर्थात् सभी गलती करने वाले है, केवल गुरु और सृष्टि की सर्जना करने वाला ही अचुक है|

वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतेह!

परिशिष्ट

१.जब धन्य - धन्य गुरु ‘श्री तेग बहादर साहिब जी’ का प्रकाश हुआ था तब गुरु ‘श्री हरगोबिंद साहिब जी’ ने नवजात बालक के आगे अपने शीश को झुका कर आदर पूर्वक नमन किया था। यह एक आश्चर्यजनक, अचरज भरी घटना थी; जिसे 'पंथ प्रकाश' नामक ग्रंथ में इस तरह से अंकित किया गया है:-

"तब गुरु सिस को बंदन किनी अति हित लाइ|
बिधीआ कहि कस बंधन की कहो मोह समझाइ||

अर्थात् भाई बिधि चंद जी ने अपने मुंखोबंद से उच्चारित किया कि गुरु पातशाह जी आपको पहले से ही ४ पुत्र रत्नों की प्राप्ति है। आपने अपने पुत्रों को बहुत आशीष दी है एवं अत्यंत प्यार भी किया परंतु इनके जन्मों पर आपने अपने शीश को नमन नहीं किया था। क्या कारण है कि इस नवजात बालक को अपने हाथों में उठा कर बहुत ही गौर से निहारा और अपने शीश को इनके समक्ष झुका दिया? गुरु जी ने बहुत ही विनम्रता और प्यार से उत्तर दिया बिधिचंद जी आप भ्रम में मत रहना आने वाले समय में यह बालक "दिन रक्ष संकट हरै। एह निरभै जर तुरक उखेरी"।।

अर्थात् यह बालक दीन के रक्षक होंगे और बड़े से बड़े संकटों का नाश कर देंगे और यह निर्भय होंगे एवं दुश्मनों को जड़ों से उखाड़ के रख देंगे। मैंने स्वयं तो इनको नमन किया है परंतु भविष्य में इनके आगे पूरी दुनिया शीश झुकाकर नतमस्तक होगी। निश्चित ही यह अद्भुत नवजात बालक 'तेग का धनी' होगा। इसलिए इनका नामकरण भी मैंने 'तेग बहादर' कर दिया है।

२. सन् १६२५ में आप जी के बड़े भ्राता भाई गुरदित्ता जी के 'परिणय बंधन' का आयोजन किया गया था। उस समय इस चार वर्ष की आयु में आप जी के 'त्याग मुरत' स्वभाव के दर्शन होते हैं। इस 'परिणय बंधन' में जब बारात का आयोजन हुआ था तो बाल 'तेग बहादर जी' को सुंदर परिधान और आभूषणों से सुशोभित किया गया था। पूरी बारात सज के 'गुरु के महल' से थोड़ी दूर पहुंचती हो तो चार वर्ष की आयु के बाल 'तेग बहादर जी' ने एक निर्धन बालक को देखा जो अत्यंत गरीब और वस्त्र हीन था। ठंड के इस समय में बाल 'तेग बहादुर जी' ने उस

बालक से पूछा कि बारात के साथ चलते हुए आपने सुंदर वस्त्र क्यों परिधान नहीं किए हैं? उस गरीब बालक में हाथ जोड़कर अश्रुपूरित आंखों से उत्तर दिया कि मेरा और मेरी मां का भी दिल करता है कि मैं सुंदर वस्त्र परिधान करूं परंतु हमारे पास तो दो वक्त खाने के लिए रोटी भी उपलब्ध नहीं है तो आप ही बताएं मैं अपने तन पर सुंदर वस्त्रों को कैसे परिधान करूं? बाल तेग बहादुर साहिब जी उस गरीब बालक की व्यथा सुनकर वहीं खड़े हो गए एवं 'भाव विभोर' होकर आप जी ने अपने सुंदर परिधान और आभूषणों को उतारकर बालक को पहना दिए।_जब चार वर्ष की आयु के बाल तेग बहादर जी से एक गरिब बालक का दुख नही देखा गया तो वह क्यों नही इंसानियत की जमीर की रक्षा के लिये अपना शीश अर्पीत करते?

३.बाल 'तेग बहादुर साहिब जी' का रुतबा बहुत ही ऊंचा था। एक दिन एक महिला अपने छोटे बच्चे को लेकर आई और कहने लगी कि यह आपका बाल सखा है; आप ही इसे समझाएं कि यह ज्यादा गुड ना खाया करें। बाल 'तेग बहादर' ने उत्तर दिया की माता जी आप मेरे पास इस मेरे बाल सखा को अगले हफ्ते लेकर आना और जब अगले हफ्ते वो माता अपने बच्चे को लेकर बाल 'तेग बहादुर जी' के पास गई और कहने लगी कि यह अभी भी बहुत गुड खाता है; आप इसे समझाएं कि ज्यादा गुड खाना अच्छी बात नहीं होती है। बाल 'तेग बहादर जी' ने उस बाल सखा को कहा कि आप ज्यादा गुड मत खाया करो तो माता बोल पड़ी कि इस एक वाक्य को बोलने के लिए आपने मुझे पूरे एक हफ्ते का इंतजार क्यों करवाया? बाल तेग बहादुर जी ने उत्तर दिया कि माताजी एक हफ्ते पहले उस दिन मैंने आप ही गुड़ खाया हुआ था। इसलिए मैं उस दिन मैं मेरे बाल सखा को कैसे मना कर सकता था? 'तेग बहादर जी' अपने वचनों के पक्के थे। प्रत्येक शब्द को तोल - मोल कर कर बोलते थे|

४. 'भावी गुरु श्री तेग बहादुर साहिब जी' ने 'गुरमत संगीत' का तो बहुत अच्छा प्रशिक्षण लिया था अपितु आप जी ने गुरमत संगीत के एक नए राग, 'राग जैजावंती' का आविष्कार भी किया था। इस 'राग जैजावंती' का प्रथम उच्चारण आप जी ने किया था और इस राग को ३१ वें राग के रूप में 'गुरमत संगीत' में शामिल किया गया था। भावी गुरु 'श्री तेग बहादुर साहिब जी' ने 'मृदंग' बजाने की

कला में महारत हासिल कर रखी थी। आप जी कीर्तन करते हुए 'मृदंग' पर साथ करते थे। सभी वाद्यों के साथ - साथ आप जी 'मृदंग' बजाने की कला में पारंगत थे।

५. ११ नवंबर सन् १६७५ को (वर्तमान समय से ३४७ वर्ष पूर्व) गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' के समक्ष समय के हुक्मरानों ने तीन शर्तों को रखा था। कोई करामत दिखाओ, या इस्लाम धर्म को कबूल कर लो और यदि दोनों शर्तो को मानने को तैयार नहीं हो तो मृत्यु के लिए तैयार हो जाओ। ऐसे कठिन समय में पूरे देश की आंखें गुरु जी के फैसले पर टिकी हुई थी। गुरु जी ने इंसानियत की जमीर को जिंदा रखने के लिए स्वयं की शहादत का फैसला लिया था। सर्व कला संपूर्ण धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' अपनी आध्यात्मिक शक्ति के द्वारा चाहे जो करामत दिखा सकते थे परंतु इंसानियत को जुल्म के खिलाफ आवाज उठाने का संदेश देने के लिए आपके द्वारा लिया गया फैसला इस पूरे मुल्क की तकदीर बदलने वाला था। विश्व के इतिहास में ऐसा कोई उदाहरण मौजूद नहीं है कि किसी दूसरे के धर्म को बचाने हेतु स्वयं की शहादत को अर्पित कर देना। आप जी के द्वारा इंसानियत के जमीर को नंगा होता हुआ देखा नहीं गया था। इसलिए अपनी शहादत की चादर से आप जी ने इंसानियत के जमीर को ढककर इंसानियत की अस्मत को बे - आबरु होने से बचा लिया था।

शोध पत्र की कुंजी

१. धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' की सोलह कलां संपूर्ण थे एवम् आप जी ने इंसानियत की जमीर के लिये अपने अनुयायियों के साथ स्वयं की शहिदी देकर, दुनिया में अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है|

२. धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' तेग के धनी तो थे ही अपितु आप जी उत्तम चिकित्सक, वास्तुकार, चित्रकार, युद्ध नितिकार एवम् गुरमत संगीत के ज्ञाता थे, आप जी ने गुरमत संगीत के राग जैजैवंती का अविष्कार भी किया था||

३. धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' की ने ऊंच - नीच के भेद को समाप्त कर समाज को एक नई दिशा प्रदान की थी|

४. धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' के जीवन चरित्र से सीखने को मिलता है कि उस अकाल पुरख के बहाने में रहकर कैसे जीवन व्यतीत करना चाहिए?

५. धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' ने स्वयं कष्ट सहन कर हमें कष्टों को सहन करने की महत्वपूर्ण सीख दी है|

६. धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' एक उंची अवस्था के मालिक थे, उन्होंने हमें धीरज, सब्र, विवेक और संतोष की दात दी थी|

७. धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' ने गुरबाणी के द्वारा महंत और पीर फकीरों के आडंबरों का भंडाफोड़ किया था|

८. धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' ने आम संगतों को गुरवाणी से जोड़कर, जन - जागृति कर एक परमेश्वर के अर्थ को समझाया था|

९. वर्तमान समय में धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' की वाणीयों को अलग से क्रमबद्ध कर उस पर अधिक शोध करने की आवश्यकता है|

शोध पत्र के विषय से संबधित साहित्य का पुनरावलोकन

१.इस विषय पर गुगल सर्च इंजन पर उत्तम साहित्य उपलब्ध है, एवम् लेखक ने इतिहासकार सरदार भगवान सिंघ जी खोजी के साथ मिलकर राष्ट्र भाषा हिंदी में सफर - ए - पातशाही नौंवी: संस्करण एक, दो और तीन ऐसी कुल ३ पुस्तक ऐमजान.इन पर ई - बुक के स्वरुप में प्रकाशित की है|

२. इतिहासकार सरदार भगवान सिंघ जी खोजी जी एवम् टीम खोज - विचार के द्वारा इस संबंध में अति उत्तम वीडियो क्लीप यू ट्युब पर गुरुमुखी भाषा में उपलब्ध है, साथ ही arsh.blog के नाम से लेखक के स्वयं के ब्लाग पर अभी तक सफर - ए - पातशाही नौवीं की १०० श्रृंखालाओं को तीन भाषाओं (हिंदी, अंग्रेजी और गुरमुखी) में चित्रों और वीडियो क्लिप के द्वारा संपूर्ण गुरु पातशाहा जी का जीवन वृतांत प्रकाशित किया जा चुका है |

३. 'पंथ खालसा' के महान विद्वान और इतिहासकार प्रिंसिपल सेवा सिंघ जी कोड़ा, डॉक्टर गंडा सिंघ जी, प्रोफ़ेसर साहिब सिंघ जी, सरदार पिंदरपाल सिंघ (कथा वाचक) जी के द्वारा रचित गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' पर प्रकाशित ग्रंथ और सभी स्त्रोतों से साहित्य सर्जन कर गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' के प्रकाश पर्व से लेकर ज्योति - ज्योत समाने के संपूर्ण इतिहास को अंकित रुप से और सोशल मीडिया के माध्यम से जाना जा सकता है|

४. इस विषय पर उत्तम साहित्य की रचनाओं को लिखने की एवम् पी.एच.डी. के लिये विद्यार्थीयों को प्रोत्साहित करने की आवश्कता है|

शोध पत्र का उद्देश्य

१. धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' के जीवन चरित्र के विशुद्ध इतिहास को प्रचारित - प्रसारित करना|

२. इस शोध पत्र को विशेष रुप से राष्ट्र भाषा हिंदी में लिखा गया है ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगों तक इस इतिहास की जानकारी पहुंच सकें|

३. ऐसे शोध पत्रों को लिख कर धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' जैसे महान गुरु सिक्खों के इतिहास को सम्मान प्रदान करना|

४. धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' गुरमत संगीत के महान विद्वान थे, इस शोध पत्र के माध्यम से विद्यार्थीयों को गुरमत संगीत में निपुण कर, 'गुरमत संगीत' को विशेष आयाम प्रदान करना|

५. धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' के द्वारा रचित गुरबाणी का प्रचार - प्रसार कर, सिक्ख धर्म की शिक्षाओं से आम जन को अवगत करवाना है|

शोध पत्र का निष्कर्ष

यह शोध पत्र मेरे जीवन का द्वितीय शोध पत्र है, इस शोध पत्र को परंपरागत ऐतिहासिक विधि से लिखा गया है| इस शोध पत्र में धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' के जीवन चरित्र के अनेकों आयामों को क्रम बद्ध लिख कर न्याय देने का प्रयत्न किया गया है| अकाल युनिवर्सिटी (साबों की तलवंड़ी पंजाब) की और से दो दिवसिय सम्मेलन का आयोजन अत्यंत महत्वपूर्ण है कारण धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' के विशुद्ध इतिहास को बडे पैमाने पर प्रचारित - प्रसारित करने हेतु ऐसे उपक्रमों की अत्यंत आवश्यकता है| मैं आशा करता हूं कि अकाल युनिवर्सिटी (साबों की तलवंड़ी पंजाब) भविष्य में भी ऐसे उपक्रमों को आयोजित करती रहेगी| ऐसे सम्मेलनों के आयोजनों से ही विश्व के समस्त विद्वानों के विचारों को अदान - प्रदान हेतु निश्चित ही एक ठोस मंच की प्राप्ती होती है|

संदर्भ सूची

इस शोध पत्र को लिखने के लिए निम्नलिखित संदर्भित ग्रंथों (स्त्रोतों) से जानकारी संग्रहित की गई है।

१. महान कोश गुरु की साखियां: लेखक:- प्यारा सिंघ जी 'पदम'

२. सुर्य प्रताप ग्रंथ: लेखक:- प्यारा सिंघ जी 'पदम'

३. इति जनकरी: लेखक:-प्रिंसिपल सतबीर सिंघ जी.

४. गुरु तेग बहादर साहिब मार्ग (पंजाबी युनिवर्सिटी): लेखक:- डा° सुख दयाल सिंघ जी.

साथ ही 'पंथ खालसा' के महान विद्वान और इतिहासकार प्रिंसिपल सेवा सिंघ जी कोड़ा, डॉक्टर गंडा सिंघ जी, प्रोफ़ेसर साहिब सिंघ जी, सरदार पिंदरपाल सिंघ (कथा वाचक) जी के द्वारा रचित गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' पर प्रकाशित ग्रंथ और सभी स्त्रोतों से साहित्य सर्जन कर गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' के प्रकाश पर्व से लेकर ज्योति - ज्योत समाने के संपूर्ण इतिहास को इस शोध पत्र में शामिल किया गया है।

५. गुरुबाणी सर्चर ऐप पर उपलब्ध साहित्य।

धन्यवाद!

शोधार्थी:- सरदार रणजीत सिंघ अरोरा 'अर्श' पुणे|

तारिख:- १२/०२/२०२२

स्थल:- पुणे (महाराष्ट्र)